भारत माता की फुलवारी

तेज बहादुर 'तेज'

भारत माता की फुलवारी

तेज बहादुर 'तेज'

बृज तेज प्रकाशन

भविष्य की आशाओं के पुंज
राष्ट्र के नौनिहालों
को समर्पित

प्रधानमंत्री
PRIME MINISTER

संदेश

आज के बच्चे कल का भविष्य हैं और कल के भविष्य को आशानुरूप बनाने की दृष्टि से आज के बच्चों में अच्छे संस्कार डालने के प्रयास में उन्हें श्रेष्ठ साहित्य प्रदान कराना हम सभी का दायित्व है। इस दृष्टिकोण से मुझे यह जानकर संतोष हुआ कि डॉ. तेज बहादुर 'तेज' द्वारा किशोर-बाल साहित्य की काव्य-पुस्तिका 'भारत माता की फुलवारी' का प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है, इससे बच्चों को काव्य-शैली में इतिहास के साथ-साथ वतन पर मर-मिटनेवाले अनेक अमर-शहीदों की गौरवगाथा की संक्षिप्त जानकारी मिल सकेगी।

बाल साहित्य लेखकों से मेरा यह अनुरोध है कि बच्चों के भविष्य को और अधिक गौरवशाली एवं स्वर्णिम बनाने के लिए वे ऐसी पाठ्य-सामग्री अधिक मात्रा में उपलब्ध कराएँ जो उन्हें अनुशासन, देशभक्ति व नैतिकता जैसे मानवीय मूल्यों की ओर प्रेरित कर सके। इससे जहाँ बच्चों में अच्छे

संस्कारों का विस्तार होगा वहीं 'भारत माता' का सिर गर्व से और अधिक ऊँचा रखने में हम सबको मदद मिलेगी।

शुभकामनाओं सहित,

अटलबिहारी वाजपेयी

नई दिल्ली

—अटल बिहारी वाजपेयी

२० दिसंबर, १९९८
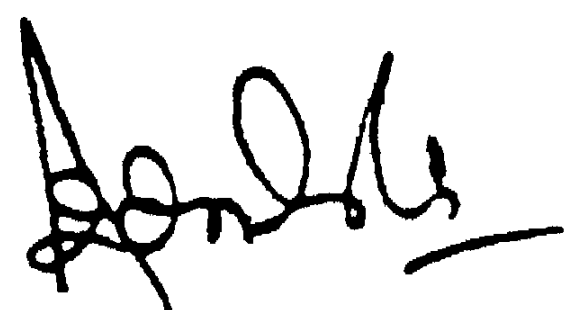
अभिमत

'भारत माता की फुलवारी' डॉ. तेज बहादुर 'तेज' की किशोर-बाल साहित्य पर लिखी गई कविताओं की ऐसी काव्य-कृति है जो कवि की काव्य-साधना का नूतन प्रयोग है। इसे मैं 'नूतन प्रयोग' इसलिए कह रहा हूँ, क्योंकि कवि के स्वदेश प्रेम की इस झाँकी में ऐसी राष्ट्रीय भावना का संचार किया गया है, जिसका आज की युवा पीढ़ी में ही नहीं वरन् संपूर्ण समाज में अभाव है। हमारे ज्ञान का क्षेत्र संकुचित ही नहीं विकृत भी है। हम 'जैक एंड जिल वेंट अप द हिल' तथा 'हंपटी डंपटी सेट ऑन अ वाल' जैसे निरर्थक पद्यों के तोता रटंत से आह्लादित होते हैं। अपने ड्राइंगरूम में आनेवाले प्रत्येक अतिथि के स्वागत में अपने बच्चों से इन पद्यों की कवायद कराते रहते हैं। हम भूल गए हैं कि हमारा भी कोई इतिहास है। हमारी कोई संस्कृति है, हमारी भी कोई सभ्यता है तथा हमारे भी कोई आदर्श पुरुष हैं। हमारी यह मानसिक स्थिति देश के लिए घातक है।

'भारत माता की फुलवारी' काव्य-कृति रामायण काल

से लेकर अधुनातन राष्ट्र निर्माताओं के चरित्र का इतिहास है। इस छोटी सी कृति में इतने बड़े इतिहास को समाहित करना राष्ट्र के प्रति समर्पित कवि की काव्य-साधना का परिणाम है। बिना आलंबन के दिशाहीन प्रवाह में बहती युवा पीढ़ी तथा किशोर पीढ़ी को यह कृति 'अनुकूल किनारा' दे सकेगी, ऐसा मेरा विचार है। सच बात तो यह है कि यह काव्य-कृति सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए पठनीय है, विशेष रूप से प्रत्येक शिक्षक और प्रत्येक विद्यार्थी के लिए। इस काव्य-कृति की भाषा सरल और सुबोध है। छंद में प्रवाह है, छंद की लय इन पद्यों के स्मरण में सहायक है। इस काव्य-कृति के प्रकाशन से किशोर साहित्य की समृद्धि होगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'भारत माता की फुलवारी' सभी के द्वारा समादृत होगी। इसलिए इस कृति का प्रकाशन आवश्यक है।

—शिवमोहन सिंह
कुलपति
डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध
विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ.प्र.)

प्रस्तावना

'भारत माता की फुलवारी' डॉ. तेज बहादुर 'तेज' की एक लंबी इतिवृत्तात्मक कविता है, जो बाल-पाठकों को अपने देश के लंबे ऐतिहासिक संघर्ष से परिचित कराने के उद्देश्य से रोचक और उत्तेजक शैली में लिखी गई है। यह बिडंबनापूर्ण है कि हिंदी में विशेष रूप से बाल साहित्य लेखन गैर प्रतिष्ठित गैर महत्त्वपूर्ण लेखकों का सरोकार माना जाता है जबकि अपने ही यहाँ बँगला में रवींद्रनाथ जैसे महान् कवि ने बाल साहित्य सृजन को अपने लेखन की एक महत्त्वपूर्ण विधा समझा।

डॉ. तेज बहादुर 'तेज' पेशेवर महत्त्वाकांक्षी लेखक नहीं हैं। उन्होंने देश के बच्चों के प्रति वही ममत्व अनुभव किया जो अपने पौत्र-पौत्रियों के प्रति। यह काव्यात्मक कहानी वे ऐसी ही शैली में सुना रहे हैं जैसे नाना-नानी, दादा-दादी अपने बच्चों को चिरकाल से सुनाते आ रहे हैं। 'भारत माता की फुलवारी' का मर्म इस शैली में निहित है। यह उत्तेजक शैली आत्मीय ढंग से बाल-पाठकों को अपनी ओर खींच

सकेगी। मुझे विश्वास है कि बाल साहित्य सृजन में लगे उत्तरदायी लेखकों में डॉ. तेज बहादुर 'तेज' अपना स्थान पा सकेंगे।

—परमानंद श्रीवास्तव

अध्यक्ष

प्रेमचंद साहित्य संस्थान, गोरखपुर

1

भारत माता की फुलवारी

मनमोहक अति सुंदर प्यारी
भारत माता की फुलवारी!
हम सब हैं इसके रखवारे
इस थाती पर हम बलिहारी!!

मुरझाने का नाम न लेते,
फूल निराले अति चटकीले!
सदा सुवासित हँसते रहते,
रंग-बिरंगे, नीले-पीले!!

अपना जीवनयापन करके,
आते माँ की गोदी सोने!
सभी वर्ग की, सभी धर्म की,
भारत माँ की सब संतानें!!

कुछ संतानें ऐसी आतीं,
जो जीवन में श्रेष्ठ रही थीं!

थीं वे दानी या फिर ज्ञानी,
ललितकला मर्मज्ञ रही थीं!!

या प्रेमी थीं सदा न्याय की,
पक्षपात था जिन्हें न भाया!
द्वेष दंभ पाखंड रहित थीं,
लोभ जिन्हें था डिगा न पाया!!

□

२

मानव थीं सच्चे अर्थों में,
सबको अपने सम ही जाना!
या फिर माँ की बनी पुजारी,
भारत माँ को अपना माना!!

जिनने मूल मंत्र अपनाया,
जीना हो तो सीखो मरना!
भारत माता की सेवा हित,
सदा हथेली पर सिर रखना!!

जब ऐसी संतानें आतीं,
माँ की गोद लेटने थककर!
स्वागत करती सारी बगिया,
महक-महककर लहक-लहककर!!

तब हर फूल महकता ज्यादा,
तब हर फूल चमकता ज्यादा!
बगिया बाग-बाग हो जाती,
नया फूल जब खिलता ज्यादा!!

क्या हम इसे देख सकते हैं?
बड़े शौक से देखो आओ!
आने पर प्रतिबंध नहीं है,
जब मन चाहे तब ही आओ!!

इस बगिया में कक्ष अनेकों,
कक्ष-कक्ष में क्यारी-क्यारी!
लग जाएँगे माह अनेकों,
देखोगे यदि बगिया सारी!!

समय अल्प है—बात नहीं कुछ,
कक्षों की झलक दिखा दूँगा!
खास-खास कुछ फूलों के भी,
परिचय संक्षिप्त बता दूँगा!!

□

3

पहिले देखो प्राचीन कक्ष,
इसकी हर छटा निराली है!
फूलों से हरी-भरी क्यारी,
इठलाती डाली-डाली है!!

पहला पुष्प विशेष मनोहर,
यह है वाल्मीकि मुनि ज्ञानी!
मरा-मरा कह राम जपा तब,
बने महामुनि ये ब्रह्म ज्ञानी!!

आहत पक्षी की दशा देख,
आँसू बहे आँख से झरझर!
मन की सारी व्यथा वेदना,
प्रगटी मुख से कविता बनकर!!

ये 'आदि कवि' कहलाए, क्योंकि
प्रथम रचयिता हैं कविता के!
काव्य-सृजन के बने जनक ये,
नव्य अनूठी ललित विधा के!!

रामायण के प्रथम प्रणेता,
थे शस्त्रों के अनुपम ज्ञाता!
निर्वासित सीता माता के,
ये ही तो थे आश्रयदाता!!

इनसे शिक्षा पा सीता-सुत,
अति वीर और विद्वान् बने!
लंकाविजयी वीरों के भी,
लव-कुश के आगे शीश झुके!!

□

४

इन्हें देखिए, यह एकलव्य,
बाल हठी पक्के थे धुन के!
वीर धनुर्धारी बन जाऊँ,
दीवाने थे इसी लगन के!!

पास गए थे गुरु द्रोण के,
राजगुरु कौरव-पांडव के!
कृपया शिष्य बना लें मुझको,
विनती करी दीन अति बनके!!

आदिवासियों के अधिपति हैं,
महाराज हिरण्यधनु शुभनाम!
उनका ही पुत्र मैं एकलव्य,
श्री चरणों में करता प्रणाम!!

'वनचारी! तेरा यह साहस',
कोड़े सम फटकार मिली!
'भाग यहाँ से मुख काला कर'
उलटे इनको दुत्कार मिली!!

पर इस वनचारी बालक ने,
अपना उत्साह नहीं छोड़ा!
गुरु-प्रतिमा स्थापित कर वन में,
उस प्रतिमा से नाता जोड़ा!!

था एकलव्य का एक लक्ष्य,
बस बनूँ धनुर्धारी महान्!
अभ्यास सतत करता रहता,
निशि-दिन का उसको नहीं भान!!

भौंक-भौंककर बाधा डाली,
एक श्वान ने सहसा आकर!
फौरन उसको मूक कर दिया,
बाणों से मुख उसका भरकर!!

□

५

कुत्ता था राजकुमारों का,
इस लाघव पर वे चकित हुए!
जब जाना शिष्य द्रोण का है,
तो सबके सब अति कुपित हुए!!

गुरु द्रोण से करी शिकायत,
'यह तो है अन्याय सरासर'!
हम से ज्यादा बना दिया है,
एकलव्य को वीर धनुर्धर!!

गुरु बोले 'जिसको दुत्कारा,
वह शिष्य बना मेरा—क्यों कर!
अब ऐसा सबक सिखाऊँगा मैं,
याद रहेगा उसे उम्र भर!!'

राजकुमारों के संग-संग,
द्रुतगति से आए द्रोण वहाँ!
प्रतिमा के सन्मुख एकलव्य,
अभ्यास सतत कर रहा जहाँ!!

आते ही बोले 'धन्य शिष्य,
मैं धन्य हुआ पा शिष्य अनूठा!
गुरुदक्षिणा में दो मुझको—तुम,
स्वयं काट निज दायाँ अंगूठा'!!

एकलव्य ने देर नहीं की,
झट दायाँ अंगूठा काट दिया!
अर्पित कर द्रोण के चरणों में,
फिर आदर सहित प्रणाम किया!!

बिना अंगूठा उँगली के ही बल,
वह शस्त्र संधान लगा करने!
फुरती न रही, लाघव न रहा,
मिले धूल में उसके सपने!!

□

६

अब देखो, यह अभिमन्यु है,
अर्जुन तनय सुभद्रानंदन!
वीर पिता के वीर पुत्र यह,
बने उत्तरा के जीवन-धन!!

कुरुक्षेत्र में युद्ध हुआ था,
कौरव-पांडव यहाँ लड़े थे!
इस भीषण महाभारत में,
एक-एक से वीर भिड़े थे!!

व्यूह बना सेनाएँ लड़तीं,
प्रचलित नियमों के अनुसार!
कभी सूची व कभी वर्ग में,
कभी वृत्त, कभी चक्राकार!!

भीषण संग्राम चला लेकिन,
दिन-रोज निकलते जाते थे!
हार-जीत के निर्णय के क्षण,
निकट नहीं दिख पाते थे!!

दुर्योधन ने कहा द्रोण से,
पड़ी जान साँसत में भारी!
युधिष्ठिर को बंदी बना लें,
जान बचेगी तभी हमारी!!

कहा द्रोण ने यदि अर्जुन को,
रण में अटका दो दूर कहीं!
पकड़ा जाएगा धर्मराज;
वह बच पाएगा आज नहीं!!

चाल दुरंगी चली द्रोण ने,
अर्जुन को अति दूर फँसाया!
अपना स्वारथ पूरा करने,
चक्रव्यूह निर्माण कराया!!

□

७

भूल-भुलैया सम चक्रव्यूह में,
अंदर घुसना बहुत कठिन था!
अंदर जाकर इसमें फँसकर,
बाहर आना नामुमकिन था!!

पांडव कुल में केवल अर्जुन,
व्यूह भेदन के थे ज्ञाता!
उसमें घुसकर तोड़-फोड़कर,
साफ निकलना इनको आता!!

पांडव हाहाकार कर उठे,
'हुई हमारी आज पराजय'!
इस बालक ने कहा गरजकर,
'अभिमन्यु के रहते असंभव'!!

सोलह वर्षीय इस बालक ने,
चक्रव्यूह को जाकर तोड़ा!
बड़े-बड़े कौरव वीरों ने,
घायल हो, रण से मुख मोड़ा!!

इसके बाणों से बिधकर के,
शव-पर-शव गिरते थे भू पर!
दिल दहले अच्छे-अच्छों के,
विकराल रूप इनका लखकर!!

चारों तरफ से किया आक्रमण,
मिलकर सात महारथियों ने!
इसने कर दिए दाँत खट्टे,
उन सभी सात धनुर्धारियों के!!

कहा द्रोण ने 'अर्जुन-सुत का,
बाल न बाँका कर पाओगे!
शस्त्र-हीन अभिमन्यु पर ही,
विजय प्राप्त तुम कर पाओगे!!'

□

८

तब उन सबने मिलकर इनका,
रथ तोड़ा, घोड़े मार दिए!
प्रत्यंचा, तरकस, धनुष काट,
सब अस्त्र-शस्त्र बेकार किए!!

शस्त्रहीन हो, रथ-विहीन हो,
रथ का पहिया कर में लेकर!
जो भी पड़ा सामने बैरी,
झपटा बड़े वेग से उसपर!!

कब तक टिकता, रथ का पहिया,
तलवार, तीर गदा के आगे!
अंतिम क्षण तक, लड़ते-लड़ते,
अभिमन्यु ने प्राण थे त्यागे!!

उस शूर सुभद्रा के सुत को,
आओ तन-मन से नमन करें!
उस रणकौशल को, साहस को,
अपने मानस में आज भरें!!

□

९

यह राजा पुरु या पोरस हैं,
देश के थे यह सजग प्रहरी!
इनसे जलते, वैर मानते,
तक्षशिला के राजा आँभी!!

यूनान देश का एक राजा,
वीर अलेक्जेंडर महान्!
चला जीतता और रौंदता,
टर्की, फारस, अफगानिस्तान!!

पहुँचा भारत की सरहद पर,
मिला उसे तक्षशिला नरेश!
उपहार अनेक उसको देकर,
अपने घुटने भी दिए टेक!!

बन गया देशद्रोही पहिला,
राजा आँभी तक्षशिला नरेश!
सिकंदर महान् का कर स्वागत,
निर्बाध किया भारत प्रवेश!!

पर पोरस अड़ गया मार्ग में,
झुकने से इनकार कर दिया!
हमलावर को सबक सिखाने,
सेना को तैयार कर लिया!!

यूनानी लोहा मान गए,
भारत के वीर जवानों का!
तलवारें कुंद हुईं चख के,
पानी भारतीय कृपाणों का!!

यह देख सिकंदर चिल्लाया,
'आँखें फोड़ो काटो सूँड़ें!
जिससे घायल होकर हाथी,
मैदान-जंग से मुँह मोड़ें'!!

यह चाल हुई थी कारामद,
हाथी पलटे, सैनिक कुचले!
रौंदे जाने के डर से सब,
घबड़ाकर उलटे भाग चले!!

जीती बाजी हारा पोरस,
हाथी पर डटा अकेला था!
लड़ता वह रहा अकेला ही,
यह शूरवीर अलबेला था!!

जब मारा गया महावत भी,
पुरु के शरीर में बिंधे तीर!

अंकुश से हाथी बैठाकर,
भू पर उतरा यह युद्ध वीर!!

स्वामी-भक्त हस्ति ने बीने,
पुरु-शरीर से चुन-चुन तीर!
पोरस की प्यास बुझाने को,
भर लाया मित्र मेरोस नीर!!

□

१०

लाया आँभी संदेशा यह,
कर लो आधीनता स्वीकार!
बच जाएँगे प्राण तुम्हारे,
बच जाएगा राज्याधिकार!!

बाँहें फड़क उठीं पोरस की,
गुस्से से आँखें हुईं लाल!
थर-थर काँप उठा आँभी,
उलटे पैरों भागा तत्काल!!

मेरोस मित्र बोला पुरु से,
'हे वीर, सिकंदर पास चलो!
जैसे मिलते वीर वीर से,
उसी भाँति निर्भीक मिलो'!!

सिकंदर ने यह प्रश्न किया,
'तुमसे बरताव करूँ कैसा?'
निर्भीक सगर्व पुरु बोले,
'राजा का राजा से जैसा'!!

इनके इस उत्तर को सुनकर,
सिकंदर भी अति प्रसन्न हुआ!
मित्र बनाकर राज्य लौटाकर,
वीर ने वीर का मान किया!!

देख वीरता पोरस की,
यूनानी हिम्मत हार गए!
आगे बढ़ने का ख्वाब छोड़,
वापस अपने यूनान गए!!

□

११

मत घड़ी देखिए घड़ी-घड़ी,
समझ रहा हूँ, जो है मन में!
आप देखना चाह रहे हैं,
सभी कक्ष इस अल्प समय में!!

चलिए कृपया कुछ तेजी से,
अब अपने दाएँ को मुड़िए!
सबसे पहिले मध्य कक्ष में,
इन चचा-भतीजे से मिलिए!!

गोरा बादल दोनों ने ही,
आहुति दे दी अपनी जान की!
करी विफल खिलजी की साजिश,
रक्षा की महिला के मान की!!

अलाउद्दीन खिलजी जब से,
बन गया था दिल्ली में सुल्तान!
सुंदरियों से हरम भरने का,
चंग-चढ़ा उसका अरमान!!

चित्तौड़ की रानी पद्मिनी की,
सुंदरता की चर्चा सुनकर!
स्त्री-लोलुप अलाउद्दीन,
चढ़ दौड़ा चित्तौड़ दुर्ग पर!!

बहुत बड़ी सेना लेकर के,
चित्तौड़ पर कर दिया हमला!
पर राणा के बल के आगे,
इसका कुछ भी बस नहीं चला!!

खिलजी ने देखा जोर जबर से,
उसकी दाल नहीं गल सकती!
पद्मिनी को पाने के लिए,
चलनी पड़ेगी चाल दुरंगी!!

उसने दोस्ती की राणा से,
कसमें खाईं, पगड़ी बदली!
फिर बहकाकर, धोखा देकर,
राणा को बना लिया बंदी!!

□

१२

खिलजी ने खबर भिजवाई,
'राणा की रिहाई तब होगी!
जब पद्मिनी मेरे खेमे में,
मेरे सामने ही होगी'!!

'रानी की डोली जाएगी,
होंगी सात सौ सखियाँ संग!
राणा से जब तक भेंट न हो
तब तक रहेंगे परदे बंद'!!

राजपूतों ने भी इस प्रकार,
काटा मक्कर को मक्कर से!
खिलजी को चक्कर में डाला,
राजपूतों ने इस उत्तर से!!

हर डोली पर थे पाँच वीर,
एक अंदर चार कहार बने!
डोली के अंदर तलवारें थीं,
सब देश प्रेम में पगे सने!!

सर पर अपने कफनी बाँधे,
बादल सेना का नायक था!
जाँबाज वीर काका गोरा,
बनकर आया सह नायक था!!

पद्मिनी वेश में बादल ने,
राणा को जाकर मुक्त किया!
वीरों ने फिर हर्षित होकर,
जय एकलिंग का नाद किया!!

खयाली पुलाव था पका रहा,
मन-ही-मन में था बहुत मगन!
चौंक पड़ा खिलजी सुनकर,
मेवाड़ी वीरों का गर्जन!!

□

93

अलाउद्दीन निकला बाहर,
देखा, राणा का पता नहीं!
डोली हैं सभी पड़ी खाली,
चम-चम तलवारें चमक रहीं!!

खिलजी चीखा और चिल्लाया,
'जल्दी से राणा को पकड़ो!
मुट्ठी भर कीड़े-भुनगों को,
मारो, काटो, पीसो, मसलो'!!

जिनको कीड़ा था समझ लिया,
वे तो कराल विषधर निकले!
उसने जिनको भुनगा समझा,
वे आँख-फोड़ टिड्डे निकले!!

घनघोर भयानक युद्ध छिड़ा,
लाशों पर लाशें गिरती थीं!
गोरा बादल की तलवारें,
जब बिजली बनकर गिरती थीं!!

कोशिशें सभी बेकार हुईं,
एक पग न सैनिक बढ़ पाए!
अंगद के पैर समान जमे,
मेवाड़ी वीर न हट पाए!!

गढ़ से जब तोपें गरज उठीं,
राणा सकुशल हैं पहुँच गए!
बड़े वेग से राजपूत भी,
सेना से जाकर जूझ गए!!

सुलतानी सेना थी विशाल,
राजपूत वीर बलिदान हुए!
कोई भी पीछे नहीं हटा,
गोरा बादल भी स्वर्ग गए!!

□

१४

इस फूल दमकते को देखो,
मेवाड़ सूर्य राणा प्रताप!
आजान बाहु ये कहलाते,
जग जाहिर था इनका प्रताप!!

जननी और जन्मभूमि को,
स्वर्ग से भी बढ़कर देते मान!
आजादी की रक्षा के हित,
लिये हथेली पर थे जान!!

अकबर के आधीन बने,
लगभग सब रजपूती राजा!
बस राणा प्रताप थे खटके,
आँखों में बनकर के काँटा!!

मानसिंह सलीम ससैन्य चले,
राणा को सबक सिखाने को!
चित्तौड़ पर झंडा फहराकर,
लोहे का दंड झुकाने को!!

'रोक न पाए जब दरिया भी,
इस नाले की हस्ती है क्या!
बुझ गईं मशालें खुद डरकर,
यह चिनगारी कर सकती क्या'!!

नाला समझा था सलीम ने,
वह तो निकला सागर विशाल!
चिनगारी जिसको था माना,
वह भड़की बन विकराल ज्वाल!!

हल्दी घाटी थी गूँज उठी,
जय एकलिंग के नारों से!
अनगिन सूरज भी चमक उठे,
सूरजवंशी तलवारों से!!

□

१५

पीली धरती भी हुई लाल,
शोणित की बहती धारों से!
धरती न दिखाई देती थी,
पट लाशों के अंबारों से!!

सैनिक हो जाते तितर-बितर,
चेतक की टापों को सुनकर!
दहल उठा था दिल सलीम का,
राणा का रौद्र रूप लखकर!!

रजपूती वीर थे गिनती में,
थी उधर फौज टिड्डी दल-सी!
इनकी संख्या घटती जाती,
वह बढ़ती आती सागर-सी!!

राणा हारे, वन-वन भटके,
प्रलोभनों को दुतकार दिया!
बरतन त्यागे, शैया त्यागी,
बस स्वतंत्रता को प्यार किया!!

□

१६

अब मिलिए वीर शिवाजी से,
इनकी रणनीति निराली थी!
अपने बल विक्रम साहस से,
नींव सुराज की डाली थी!!

बचपन में माँ जीजाबाई,
राम-कृष्ण की कथा सुनातीं!
देश-प्रेम की लोरी गाकर,
आजादी के भाव जगातीं!!

आजादी की चिनगारी जब,
भड़क उठी थी बनकर शोला!
अपने घर के निकट दुर्ग पर,
इनने सहसा धावा बोला!!

जब बीजापुर के कई किले,
इनने बरजोरी से झपटे!
तब नवाब की आँखों में,
ये काँटा बनकर के खटके!!

दे दिया हुक्म अफजल खाँ को,
'काँटा मय-जड़ के खतम करो!
नासूर बने इसके पहिले,
इस दुश्मन का सिर कलम करो'!!

अफजल से सोचा लड़ भिड़कर,
मैं पार नहीं हूँ पा सकता!
इसको धोखे में रखकर ही,
मैं इसपर काबू पा सकता!!

उसने दोस्ती का ढोंग रचा,
पर शिवा सजग थे घातों से!
वह बाल न बाँका कर पाया,
खुद मरा शिवा के हाथों से!!

औरंगजेब ने हुक्म दिया,
सेनापति शाइस्ता खाँ को!
'ख्वाहिश है माबदौलत की,
देखें उस पहाड़ी चूहे को'!!

शाइस्ता खाँ पहुँचा पूना,
संग फौज फाटा था भारी!
पर चौकन्ने थे वीर शिवा,
कर ली थी गुपचुप तैयारी!!

छापा मारी युद्धकला में,
थे चतुर मराठा लासानी!
संयोग से इनको मिले शिवा,
रण कुशल साहसी सेनानी!!

☐

१७

उसी कला का लिया सहारा
शाइस्ता पर छापा मारा!
अपनी कुछ उँगलियाँ कटाकर,
जान बचा भागा बेचारा!!

राजा जयसिंह के कहने पर,
औरंगजेब से गए मिलने!
आदर-सत्कार के बजाय,
अपमान पड़े इनको सहने!!

कैद किए गए उस मकान में,
जिसमें थे ये उस समय ठहरे!
सबकी आँखों में धूल झोंक,
ये साफ वहाँ से बच निकले!!

अपने घर वापस पहुँचे जब,
घर-घर खुशियों के दीप जले!
अंबर भी गूँजा हर्षनाद से,
सब आपस में गले मिले!!

जनता की ही पुकार पर,
शिवाजी का राज्याभिषेक हुआ!
महाराज शिवाजी की जय से,
सारा महाराष्ट्र गूँज उठा!!

□

१८

यह इब्राहीम खाँ गार्दी,
वीर मराठों के सेनानी!
ये कौल के थे सदा पक्के,
तीखा इनकी असि का पानी!!

अहमद शाह अब्दाली ने,
जब दिल्ली पर आक्रमण किया!
नवाब अवध औ रूहेलों ने,
हमलावर का ही साथ दिया!!

अड़ गए मराठे रस्ते में,
अब्दाली को रुकना ही पड़ा!
पानीपत के मैदानों में,
दोनों में भीषण युद्ध छिड़ा!!

वीर मराठों के सम्मुख जब,
अब्दाली की न गली दाल!
धोखे में पड़ जाएँ मराठे,
फैलाया अफवाहों का जाल!!

अब्दाली के भ्रमजाल में फँसकर,
वीर मराठों के पग उखड़े!
अति घायल, मूर्च्छित गार्दी भी,
अब्दाली के फिर हाथ लगे!!

अब्दाली बोला गार्दी से,
'लगता तू मुझे पठान नहीं!
मुझको तो ऐसा लगता है,
तू हरगिज मुसलमान नहीं'!!

गार्दी बोले 'मुसलमान वही,
अन्याय का जो विरोध करे!
वह हरगिज मुसलमान नहीं,
जो अपने वतन से द्रोह करे'!!

□

१९

इसी मुल्क में बड़ा हुआ मैं,
इसी मुल्क का पीता पानी!
जो प्यार मुझे है यहाँ मिला,
नहीं मिल सकता उसका सानी!!

पढ़ता नमाज मैं पाँच बार,
डिगाता नहीं अपना ईमान!
मुझको प्यारा है हिंद देश,
मैं हूँ एक सच्चा मुसलमान!!

'पढ़ते हो तुम किस जुबान में?'
'इसमें कुछ फर्क नहीं पड़ता!
मुझको तो मालूम यही बस,
दिल की आवाज खुदा सुनता'!!

'क्या तुम मानते हो राम को?'
'उनकी बहुत कद्र हूँ करता!
अल्लाह, ईश्वर और गॉड में,
मैं कुछ भी नहीं फर्क समझता'!!

बहादुरी के बजाय तूने
जीती जंग है मक्कारी से!
हम हारे हैं तुझसे केवल,
गद्दारों की गद्दारी से!!

गर गद्दार समझ यह लेते,
देश बड़ा मजहब के आगे!
नहीं बढ़ा पाता तू हरगिज,
एक कदम सरहद के आगे!!

मैं देख रहा हूँ ख्वाब एक,
इक दिन तो वह पूरा होगा!
हिंदू-मुसलिम की राखों से,
इनसान नया पैदा होगा!!

□

२०

जाति, धर्म, भाषा, प्रदेश का,
बाद में वह होगा हामी!
वह तो होगा हर मायनों में,
सच्चे दिल से हिंदुस्तानी!!

उसका मकसद यही होगा,
मुल्क में चैन व अमन रखना!
जो जालिम या हमलावर हों,
उनका ही सदा दमन करना!!

'मत मुझसे कुफ्र की बात कहो,
वरना मैं सख्त सजा दूँगा!
तुम चीखोगे, चिल्लाओगे,
टुकड़े-टुकड़े करवा दूँगा'!!

'यह जिस्म फकत है कट सकता,
पर रूह नहीं मर सकती है!
तुझ जैसे जालिम के आगे,
यह कभी नहीं झुक सकती है'!!

अब्दाली बोला 'करो साथ,
तुमको सरदार बना दूँगा!
जो तुमको दिया मराठों ने,
उससे आला रुतबा दूँगा'!!

गार्दी बोले 'नामुमकिन है,
स्वदेश का मैं गद्दार बनूँ!
मेरी तो यही तमन्ना है,
फिर से सेना तैयार करूँ'!!

मैदान जंग में आकर के,
फिर तुझसे दो-दो हाथ करूँ!
जो हवस न पूरी हो पाई,
पूरी सिर तेरा काट करूँ!!

तब अब्दाली ने दिया हुक्म,
'सब हाथ-पैर इसके काटो!
आँखें फोड़ो गूँगा कर दो,
बोटी-बोटी इसकी छाँटो'!!

हाथ-पैर कटे पर उफ न की,
हँसते-हँसते दे दिए प्राण!
पर इब्राहिम खाँ गार्दी ने,
मरते-मरते छोड़ी न आन!!

□

२१

कृपया देखिए आधुनिक कक्ष,
बस थोड़ा चलना है आगे!
ऐसी विभूतियाँ देखेंगे,
जिनके डर से डर खुद भागे!!

अपने जीवन में सब ही थे,
आजादी के ही मस्ताने!
ये दीवाने आजादी के,
आजादी के ही परवाने!!

सदा खून से अपने सींचा,
आजादी के कल्पवृक्ष को!
है स्वराज्य अधिकार हमारा,
जाना केवल मूल मंत्र को!!

रानी झाँसी लक्ष्मी बाई,
ये बलिया के मंगल पांडे!
ये बिठूर के नाना साहब,
जाँबाज वीर तात्या टोपे!!

अहमद उल्लाशाह मौलवी,
हजरत महल अवध की बेगम !
नर केसरी राजा कुँवर सिंह,
इनको था सिर्फ देश का गम !!

□

२२

जो आए बनकर व्यापारी,
कपट नीति का जाल बिछाकर!
भारत के शासक बन बैठे,
छल से, बल से, मित्र द्रोह कर!!

अवध बेगमों को था लूटा,
चेत सिंह को बहुत सताया!
राज्य हड़पने, देश लूटने,
मुख सुरसा की तरह बढ़ाया!!

जब अत्याचार बढ़ा ज्यादा,
सिर के ऊपर गुजरा पानी!
तब देशप्रेमियों ने मिलकर,
कुछ सबक सिखाने की ठानी!!

रोटी घूमी व घूमा कमल,
थी लगी सुलगने चिनगारी!
बच सके न सैनिक भी इससे,
कर ली थी गुपचुप तैयारी!!

अठारह सौ सत्तावन में,
छिड़ा स्वातंत्र्य संग्राम प्रथम!
इस तेजी से, इस फुरती से,
अंग्रेज हो गए थे बेदम!!

दस मई को ही मेरठ में,
सुलगी क्रांति की प्रथम मशाल!
झाँसी, दिल्ली व लखनऊ में,
बनकर फैली विकराल ज्वाल!!

चल पड़े सिपाही भारत के,
फिरंगियों को मार भगाने!
और बहादुर शाह जफर को,
दिल्ली की गद्दी दिलवाने!!

□

२३

कुछ कहते 'अल्लाहो अकबर'
कुछ कहते 'एकलिंग की जय'!
कुछ कहते 'हर-हर महादेव',
सब कहते 'हिंदोस्तां की जय'!!

आजादी के प्रथम युद्ध की,
अद्‌भुत सेनानी थी रानी!
अंग्रेजी सेनापतियों ने,
इनके आगे माँगा पानी!!

रानी की तलवार युद्ध में,
बिजली सम सदा चमकती थी!
इधर लपककर उधर दमककर,
बैरी के सिर पर पड़ती थी!!

रानी आई, यह सुनते ही,
गोरों में भगदड़ मच जाती!
तात्या टोपे का नाम ही सुन,
काई-सी फौज थी फट जाती!!

यह वीर टूटता दुश्मन पर,
जैसे बाज लवा पर टूटे!
इतनी तेजी से आता था,
जैसे तीर धनुष से छूटे!!

डर इतना था अंग्रेजों में,
दिखता हरदम तात्या टोपे!
चिल्लाते दुश्मन सोते में,
आया तात्या, आया टोपे!!

□

२४

हजरत महल ने लखनऊ में,
ऐसा बरपा कर दिया कहर!
रेजीडेंसी को नष्ट किया,
अंग्रेज भगे छिपकर-डरकर!!

इतनी दहशत छाई उनपर,
उनके सामान लगे बँधने!
अंग्रेज डर गए थे इतने,
दिन में भी तारे लगे दिखने!!

अंग्रेजों का साथ दे दिया,
कुछ भारतीय गद्दारों ने!
सेना और रसद पहुँचाई,
निकृष्ट कुलांगारों ने!!

राहत की साँसें फिर लौटीं,
इनके फिर पैर लगे जमने!
सामान बँधे जो दहशत में,
सारे लग गए पुनः खुलने!!

रानीजी स्वर्ग सिधार गईं,
तात्या वीर चढ़े फाँसी पर!
अंग्रेजों ने तांडव नृत्य किया,
भारत माता की छाती पर!!

२५

अजीजन को इधर देखिए,
आजादी की मतवाली थी!
कानपुर की ये अति अजीज,
मशहूर नाचनेवाली थी!!

जब छिड़ा प्रथम स्वातंत्र्य समर,
यह अपने को न रोक सकीं!
अपनी सहेलियों को लेकर,
मैदाने जंग में कूद पड़ीं!!

चूड़ियाँ खनकती जिनमें थीं,
उन हाथों ने हथियार गहे।
वह भीषण युद्ध किया इनने,
गोरे हाहाकार कर उठे॥

किसी देश-द्रोही ने जाकर,
अंग्रेजों को दे दिया पता!
गोरों ने भी घात लगाकर,
इनको सोते में जा पकड़ा!!

अंग्रेज कमांडर चकित हुआ,
इनकी सुंदरता को लखकर!
पर सहमा भी था बहुत अधिक,
इनकी जाँबाजी को सुनकर!!

वह बोला 'माँगो माफी गर,
तुम तुरंत रिहा हो जाओगी!
वरना फौजी कानून तहत,
नाहक में मारी जाओगी'!!

यह बोली 'तुम जैसे कायर,
जालिम मरने से हैं डरते!
आजादी के दीवाने तो,
सिर पर कफन हैं बाँधे रहते'!!

इस एक अकेली नारी पर,
गोलियाँ दनादन बरसाईं!
हिम्मत थी बड़ी अजीजन की,
न चीखी तड़पी चिल्लाई!!

गिरते-गिरते मुँह से निकले,
जंग…आ…जादी…जिंदा…बाद!
मेरा…मे…रा…हिंदो…स्तान,
हिंदो…स्तान…जिंदा…बाद!!

□

२६

इधर देखिए श्वेत फूल को,
मोहनदास करमचंद गांधी!
भारत के हैं यह राष्ट्रपिता,
जग के बंधु महात्मा गांधी!!

त्याग, तपस्या और अहिंसा,
आधार बनाया जीवन में!
सदा सत्य पथ पर ही चलना,
ध्येय रखा बापू ने मन में!!

अंग्रेज सभी मदमस्त हुए,
पीकर के शासन की मदिरा!
भारत माता को बुरी तरह,
दाबा, पीसा, रौंदा, कुचला!!

इन लुटेरों ने दोनों हाथों से,
लूटी संपदा भारत की!
अपनी बर्बरता से इनने,
भारत की मिट्टी गारत की!!

हम खोल नहीं सकते थे मुख,
कस दिया हमें था शिकंजे में!
आहें भरना भी था गुनाह,
इनके कानून के पंजे में!!

भारत माँ की आहें सुनकर,
अपने को रोक नहीं पाए!
शांति क्रांति की आँधी लेकर,
गांधी समरांगण में आए!!

ऐसा था आकर्षण इनमें,
कि इनके पीछे चल ही पड़े!
लाखों-करोड़ों नर और नारी,
सब बाल युवक और वृद्ध बड़े!!

असहयोग आंदोलन छेड़ा,
मार्ग अहिंसा का अपनाया!
नमक बनाया दांडी जाकर,
वस्त्र विदेशी को जलवाया!!

□

२७

घर-घर चरखा चक्र चलाया,
कतवाया बुनवाया खद्दर!
इस छोटे से चक्र के आगे,
दहला था लंदन मानचेस्टर!!

नौकरशाही ने भी अपने,
अत्याचारों की हद कर दी!
सत्याग्रहियों से जेलें सारी,
ठूँस-ठूँसकर बेहद भर दीं!!

लिये हुए बंदूक लाठियाँ,
एक तरफ थी नौकरशाही!
सिर पर बाँधे कफन, निहत्थे,
एक तरफ गांधी अनुयायी!!

उधर लाठियाँ थीं जब तनती,
इधर मस्तक थे तन जाते!
राइफलें सीधी तनते ही,
सीने सबके खुल-खुल जाते!!

सत्य-अहिंसा के मुकाबले,
पशुबल की आखिर हार हुई!
बाँधे बिस्तर अंग्रेजों ने
गांधी की जय-जयकार हुई!!

वे आए थे शायद जग में,
भारत माँ आजाद कराने!
तीस जनवरी अड़तालिस को,
चले गए फिर स्वर्ग बसाने!!

□

२८

अति चमकीला लाल फूल यह,
सुभाषचंद्र बोस नेताजी!
आजादी के लिए लगा दी,
जिनने अपनी जान की बाजी!!

नेताजी ने कांग्रेस छोड़ी,
गांधी नीति नहीं जब भाई!
फॉरवर्ड-ब्लॉक के नाम से,
एक पार्टी अलग बनाई!!

छिड़ गया दूसरा विश्वयुद्ध,
जर्मनी हो गया था हावी!
अंग्रेजों ने इस युद्ध में,
सहायता भारत से माँगी!!

ये थे युद्ध प्रयास विरोधी,
आशंकित थी नौकरशाही!
दहशत खाती नेताजी से,
सारी-सारी गोराशाही!!

नौकरशाही ने कैद किया,
नेताजी को घर के अंदर!
ना कोई मिलने जा सकता था,
ना ये आ सकते थे बाहर!!

नेताजी घर से निकल गए,
एक पठान का वेश बनाकर!
नौकरशाही भाँप न पाई,
पहुँच गए भारत से बाहर!!

जियाउद्दीन बनकर पहुँचे,
ये चुपचाप अफगानिस्तान!
जर्मनी गए; पनडुब्बी से,
नेताजी फिर गए जापान!!

□

२९

रास बिहारी बोस मिल गए,
सोना और सुगंध मिल गए!
जापानी शासन के द्वारा,
आश्वासन पर्याप्त मिल गए!!

सभी भारतीय युद्धबंदी,
सिंगापुर में ही थे रखे गए!
उनसे ही बातें करने को,
नेताजी भी फिर वहीं गए!!

भारतीय वीर तैयार हुए,
उनको भी था बदला लेना!
दृढ़ आजाद हिंद फौज हुई,
पाकर एक प्रशिक्षित सेना!!

नेताजी ने भरी सभा में,
यही घोषणा थी करवा दी!
'मुझको तुम दोगे खून अगर,
मैं दूँगा तुमको आजादी'!!

नारा लगा 'चलो दिल्ली को',
'जय हिंद' बन गया अभिवादन!
दिल्ली की ओर जवान चले,
उत्साह भरा था उनका मन!!

दृढ़ निश्चय करके फौज चली,
दुश्मन को मजा चखाने को!
देकर अपनी कुरबानी भी,
माँ को आजाद कराने को!!

बर्मा से भारत आने का,
था मार्ग कोहिमा से होकर!
अंग्रेज जानते थे इसको,
मुश्किल होगी इसको खोकर!!

☐

30

इसलिए वहाँ अंग्रेजों ने,
कर ली थी पूरी तैयारी!
फिर भी माता के लालों ने,
कर दिया वहाँ हमला भारी!!

हमले जितने हुए देश पर,
सब हुए देश पर पश्चिम से!
गौरी, गजनी, तैमूर लंग,
सब घुसे देश में पश्चिम से!!

पूरब से भारत पर हमला,
इतिहास में प्रथम निराला था!
माँ को आजाद कराने को,
बेटों ने घेरा डाला था!!

हमला गोरों पर विफल हुआ,
मंसूबे नहीं हुए पूरे!
भारत आजाद कराने के,
अरमान न हो पाए पूरे!!

दिल्ली पहुँचना चाहते थे,
पर इनसे दिल्ली दूर रही!
टूट गया दिल नेताजी का,
आशाएँ चकनाचूर हुईं!!

□

39

जरा देखिए इस गुच्छे को,
इतने लाल हैं जैसे खून!
इनका उसूल था जीवन में,
लेंगे खून के बदले खून!!

सुखदेव, भगतसिंह, राजगुरु,
बिस्मिल, लाहिड़ी और आजाद!
बटुकेश्वर के अनशन पर तो,
सरकार भी हो गई थी अवाक् !!

आजाद रहे निर्भीक सदा,
क्रांतिकारियों के सेनानी!
आजादी के दीवाने ने,
जीवन में हार नहीं मानी!!

ऐसे थे सेवक माता के,
सिर लिये हथेली पर फिरते!
सब इतने तेज बहादुर थे,
अंग्रेज सदा इनसे डरते!!

इनका मत था कि अहिंसा से,
स्वराज कभी नहीं मिल सकता!
हाथ जोड़ने से ही केवल,
दुष्ट प्रसन्न नहीं हो सकता!!

लाख पिलाओ दूध साँप को,
विषहीन नहीं होगा विषधर!
विषहीन उसे करना होगा,
उसके विष के दाँत तोड़कर!!

सबसे अच्छा कि सिर कुचलो,
दुश्मन को जिंदा मत छोड़ो!
ना रहे बाँस न बजे बाँसुरी,
सदा वृक्ष को जड़ से खोदो!!

शठे शाठयम् समाचरेत,
इस मूल मंत्र के थे हामी!
हिंसा पथ पर चलनेवाले,
ये सब स्वतंत्रता सेनानी!!

सब स्वतंत्रता सेनानी थे,
खून गरम था बेहद इनका!
बंदूक, बमों, पिस्तौलों से,
खेल खेलना जीवन इनका!!

□

३२

अब देखो इस लाल फूल को,
तेज पुंज है वीर सावरकर!
आजादी की आग धधकती,
रहती दिल में सदा निरंतर!!

ये नहीं अहिंसावादी थे,
थे सशस्त्र क्रांति के ये हामी!
अंग्रेजों के लिए बने थे,
ये जानी दुश्मन सरनामी!!

पुलिस रह गई खड़ी टापती,
निकल गए ये देश के बाहर!
जम गए जाकर लंदन में,
गोरों के ही गढ़ के भीतर!!

मदनलाल ढींगरा बन गया,
इनका एक प्रबल अनुयायी!
कहते हैं पिस्तौल मदन ने,
इनकी इनके हाथों पाई!!

राजद्रोह का अभियोग लगा,
जब भारत में इनके ऊपर!
लंदन में इन्हें कैद करके,
रखा गया जेल के अंदर!!

कुछ सैनिक चुस्त जवानों के,
पहरे में इनको दिया भेज!
क्या पहरे में रुक सकी हवा?
क्या बाँधे से बँध सका तेज?

जब कुछ ही दूर फ्रांस रह गया,
तूफान उठा सावरकर में!
दे चकमा पहरेदारों को,
वे कूदे अथाह सागर में!!

रक्षकों की नजरों से बचने,
तैरे ये पानी के भीतर!
मीलों की दूरी तय करके,
जा पहुँचे ये फ्रेंच भूमि पर!!

शरण नहीं दी और उलटे ही,
फ्रेंच पुलिस ने पकड़ लिया!
ले जाकर वापस जहाज,
अंग्रेजों को फिर सौंप दिया!!

मुंबई में चला मुकदमा,
जज ने नहीं देर लगाई!

ठोस सबूत न मिलने पर भी,
उम्रकैद की सजा सुनाई!!

भेजे गए ये काले-पानी,
एक तंग कोठरी के अंदर!
जेलर ने बंद करके कहा,
सड़ते रहो यहीं उम्र भर!!

आजादी आ जाने पर ही,
इनको कारागृह से मुक्ति मिली!
हो गए मुक्त वे कहने को,
वास्तविक मुक्ति नहीं मिली!!

बेदर्द यातनाओं के कारण,
हो गया वीर का तन जर्जर!
देख दशा अपने भारत की,
मन भी हो गया इनका जर्जर!!

तन भी जर्जर, मन भी जर्जर,
ये ज्यादा दिन तक नहीं जिए!
इस फुलवारी में खिले यहाँ,
माँ की गोदी में लेट गए!!

□

33

इस लाल फूल को देखो तो,
मदनलाल ढींगरा बलिदानी!
दुश्मन के ही गढ़ में घुसकर,
उसे मिटाने की ही ठानी!!

कर्जन बॉयली कभी यहाँ था,
बदनाम एक खुफिया अफसर!
लंदन पहुँचा यह अधगोरा,
गोरों का सलाहकार बनकर!!

जगह-जगह भाषण में करता,
भारत के खिलाफ यह विष वमन!
यह अत्याचारी कर्जन था,
क्रांतिकारियों का दुश्मन!!

हर समय एक ही धुन रहती,
इस अधगोरे के मन में!
किस तरह पिसे भारत की जनता,
दमन-चक्र की चक्की में!!

खून खौल उठा मदनलाल का,
इसकी करतूतों को सुनकर!
प्रण किया नहीं रहने देंगे,
हम कर्जन को इस धरती पर!!

लंदन के जहाँगीर हॉल में,
भरी सभा में अंदर घुसकर!
मदनलाल ने गोली मारी,
कर्जन बॉयली के सीने पर!!

एक देशद्रोही ने इनको,
पीछे से जाकर जकड़ लिया!
पिस्तौल फेंक दी जब इनने,
तब पुलिस ने आकर पकड़ लिया!!

जज ने फिर प्रश्न किया इनसे,
'क्या तुमने की है यह हत्या?'
'दंडित करना अपराधी को,
क्या जज साहब होती हत्या?'

जज ने न्याय का ढोंग रचा,
फाँसी देने का हुक्म दिया!
भारत माता की जय बोलकर,
ढींगरा वीर शहीद हुआ!!

□

३४

भारत माता की बेटी भी,
रण में कब पिछड़ीं औरों से!
ऐसे जौहर दिखलाए थे,
दहल गए दिल गोरों के!!

यह प्रीतिलता वाड्डेडर जो,
चटगाँव की गौरव कहलातीं!
रग-रग में इनके क्रांति भरी,
यह कभी नहीं थी घबरातीं!!

डल घाट निकट एक खोली में,
छिपकर रहती वेश बदलकर!
अंग्रेजों ने घेरी खोली,
गुप्तचरों द्वारा पता लगाकर!!

जब कैप्टन फैमरुन मरा,
प्रीतिलता की गोली से!
फौजों में भी गड़बड़ी मची,
ये बच निकलीं उस खोली से!!

अंग्रेजों का अपना क्लब था,
जिस जगह एकत्रित होते!
उन सबकी रक्षा करने को,
काफी फौजी जवान रहते!!

अपने कुछ साथियों संग,
प्रीतिलता ने धावा मारा!
बिजली बनकर कितनों को ही,
इनने मौत के घाट उतारा!!

यह नहीं जान पाया कोई,
कितने उस दिन उस जगह मरे!
सरकार ने यह अवश्य कहा,
'केवल तेरह अंग्रेज मरे'!!

खाली पिस्तौल लिये कर में,
ये गिरी बहुत घायल होकर!
जिंदा ही इन्हें पकड़ने को,
अंग्रेजों ने घेरा जाकर!!

जब अंग्रेजों के हाथों से,
इनने देखा बचना दुस्तर!
खाकर के साइनाइड जहर,
भारत माँ पर हुई निछावर!!

□

३५

ये लाल-लाल जो चार फूल,
एक ही टहनी से लटक रहे!
काकोरी के शहीद चारों,
क्या आन-बान से चमक रहे!!

नायक थे पं. रामप्रसाद,
बिस्मिल था इनका उपनाम!
मुरदों में भी जान फूँक दें,
होते इनके ऐसे कलाम!!

ये हैं अशफाक उल्ला खाँ,
सब लेते इज्जत से ही नाम!
ये कभी नहीं पीछे हटते,
चाहे हो कितना कठिन काम!!

यह ठाकुर रोशन सिंह है,
यह मोशाय राजेंद्र लाहिड़ी!
गोरों को मजा चखाने की,
थी दिल में इनके साध बड़ी!!

यह बंगाली तो वह ठाकुर,
यह पंडितजी वह मुसलमान!
नीर-क्षीर सम घुले-मिले ये,
हुए चार बदन पर एक जान!!

धन पास नहीं इतना दल के,
खरीद सकें काफी हथियार!
धन मिले किस तरह से दल को,
सब करने बैठे यही विचार!!

बिस्मिल बोले 'डाके के सिवा',
दिखता है अन्य उपाय नहीं!
लूटें हम भाई बंदों को,
यह होगा हरगिज न्याय नहीं!!

□

३६

अब यह प्रस्ताव हमारा है,
लूटा जाए धन सरकारी!
साथी बोले ठीक यही,
अब करो साथियो तैयारी!!

हर स्टेशन की आय उसी दिन,
लखनऊ ही लाई जाती!
उस पैसेंजर गाड़ी से जो,
एट डाउन थी कहलाती!!

काकोरी के आसपास ही,
इन लोगों ने ट्रेन रोककर!
सरकारी धन लूटा सारा,
लोहे का संदूक तोड़कर!!

दस स्वतंत्रता सेनानियों ने,
चहुँ ओर थी धूम मचा दी!
सरकारी धन को लूटकर,
ब्रिटिश राज की चूल हिला दी!!

नौ अगस्त सन् पच्चीस को,
भारी रेल डकैती सुनकर!
बौखला उठी नौकरशाही,
दिए हुक्म पुलिस को तत्क्षण!!

क्रांतिकारियों को जा पकड़ो,
ज्यादा-से-ज्यादा तुम जाकर!
जिनपर भी कुछ भी शुबहा हो,
रह पाए न कोई भी बाहर!!

पुलिस ने भी जाल बिछाकर,
पकड़े बीसेक क्रांतिकारी!
हत्या और डकैती जैसे,
चार्ज लगाए इनपर भारी!!

जज हैमिल्टन ने कुछ बरी किए,
चौदह को कारावास दिया!
इन चारों वीरों को जज ने,
फाँसी देने का हुक्म दिया!!

बिस्मिल की माँ ने चारों को,
माला पहनाकर तिलक किया!
आरती उतारी माता ने,
चारों पुत्रों को विदा किया!!

फाँसी के तख्ते पर चढ़कर,
भारत माँ का जयनाद किया!
अति हर्षित हो इन चारों ने,
फाँसी का फंदा चूम लिया!! □

३७

शहीदे आजम भगत सिंह,
प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी थे!
खून गरम था बेहद उनका,
ये सशस्त्र क्रांति पुजारी थे!!

साइमन कमीशन के खिलाफ,
लाहौर में जब जुलूस निकला!
गोराशाही ने जलूस पर,
कर दिया जोरदार हमला!!

बरसाईं लाठियाँ पुलिस ने,
अहिंसक निहत्थी जनता पर!
पंजाब केसरी लालाजी,
गिर पड़े अधिक घायल होकर!!

जब लालाजी का निधन हुआ,
तब भगत सिंह हुंकारा था!
गोरे सार्जेंट सांडर्स को,
तब मौत के घाट उतारा था!!

□

३८
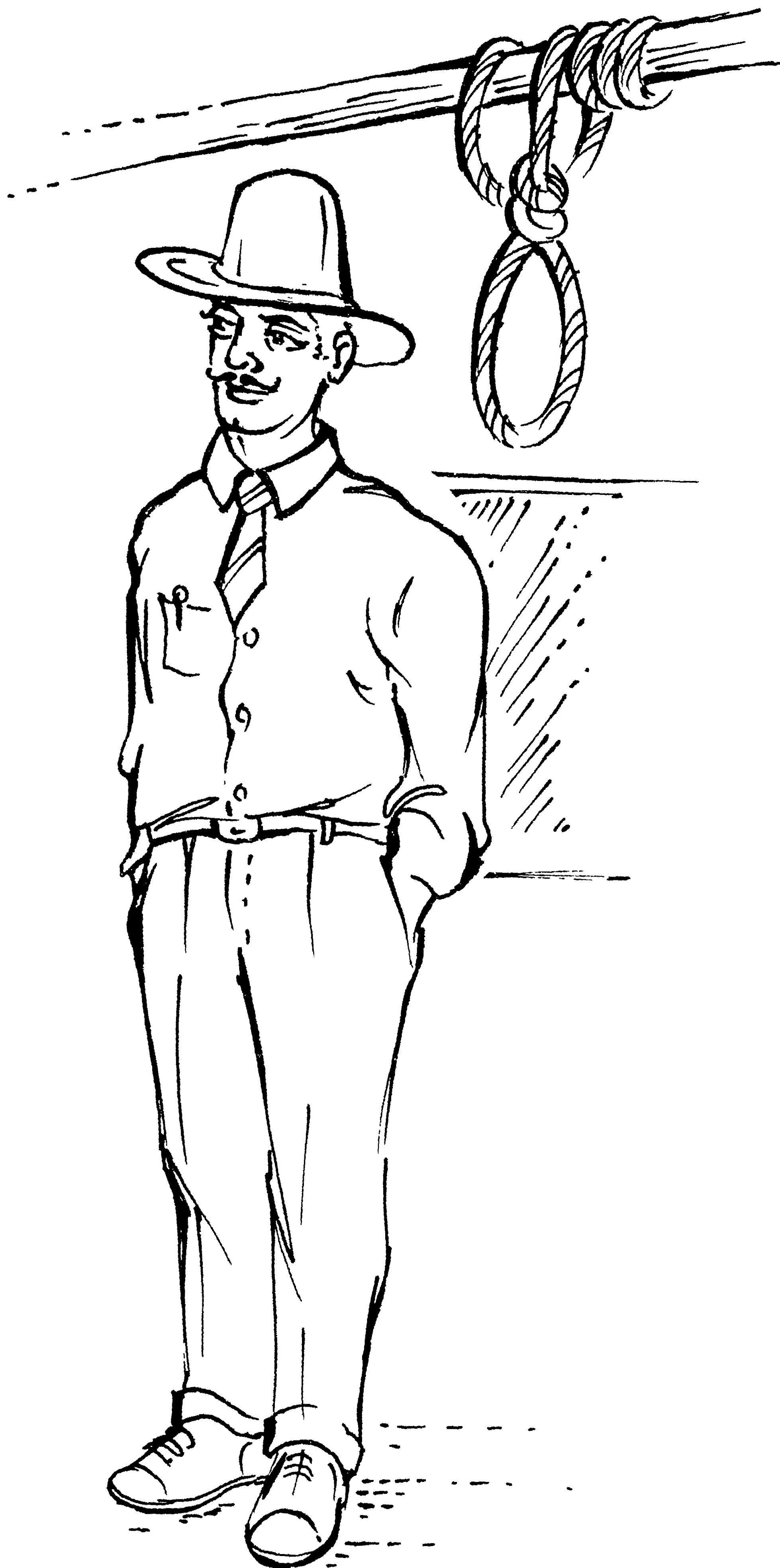
असेंबली में भाषण देने,
सर जान साइमन खड़े हुए!
भगत सिंह, बटुकेश्वर दत्त ने,
विरोधी नारे बुलंद किए!!

बटुकेश्वर ने परचे फेंके,
वीर भगत सिंह ने फेंका बम!
विस्फोट हुआ इतना भारी,
अंग्रेज हो गए थे बेदम!!

भगदड़ मच गई सदस्यों में,
ये दोनों वीर नहीं भागे!
जब पुलिस पकड़ने को आई,
ये खड़े रहे थे मुसकाते!!

लाहौर षड्यंत्र रचाने का,
अभियोग लगाया था इनपर!
फाँसी की सजा सुनाई जज ने,
न्याय का बस नाटक रचकर!!

काल कोठरी में बंद हुए,
जो उसी समय खोली जाती!
जब इनका मल-मूत्र हटाने,
एक जमादारिन थी आती!!

ये उससे घृणा नहीं करते,
उसका सम्मान बहुत करते!
ये उस वृद्ध जमादारिन को,
'बेबे' कह संबोधित करते!!

□

३९

फाँसी पूर्व जेलर बोला,
'अंतिम इच्छा तो बतला दो'!
'बेबे के हाथ की रोटी,
जेलर साहब तुम खिलवा दो'!!

'माँ तुम्हारी तो रहती है दूर,
कैसे जल्दी आ सकती यहाँ'!
ये हँसकर जेलर से बोले,
'वे तो आती हैं रोज यहाँ'!!

'तुम सिख और यह जमादारिन,
कैसे हुई यह माँ तुम्हारी'?
'माँ करती थी जो बचपन में,
वही काम करती बेचारी'!!

तब जेलर की आज्ञा पर ही,
वह जमादारिन गई बुलवाई!
चौंक पड़ी जब जेलर ने,
भगत सिंह की इच्छा बतलाई!!

वह बोली 'हाय राम, इनका,
धर्म नहीं मैं ले सकती!
अपने इन गंदे हाथों से,
मैं रोटी नहीं खिला सकती'!!

ये बोले 'गंदगी उठाते,
माँ के हाथ भी होते गंदे!
गर हर माँ ऐसे ही सोचे,
भूखे ही मर जाएँ बच्चे'!!

हर मानव के एक बार तो,
दिन में होते हाथ हैं गंदे!
हाथ साफ कर, नहा-धोकर,
गंदे हाथ ही बनते चंगे!!

गंदगी साफ की है मेरी,
माँ ने बचपन में, अब इनने!
मेरी नजर में फर्क नहीं कुछ,
उन माँ में या इन माँ में!!

इनकी हठ पर, हार मानकर,
जमादारिन ने सेंकी रोटी!
बड़े प्रेम से माँ के हाथों,
बेटे ने फिर खाई रोटी!!

रोटी खाकर वीर भगत सिंह,
मारे खुशी के फूल गए!
'भारत माता की जय' बोली,
चढ़कर फाँसी पर झूल गए!! □

४०

अब यह विलक्षण फूल देखिए,
यह है चंद्रशेखर आजाद!
कैसे कटें बेड़ियाँ माँ की,
इस धुन में रहते दिन-रात!!

कुछ स्वतंत्रता सेनानी थे, शस्त्रों
के प्रयोग के हामी!
उन सबने ही इनको माना,
अपनी सेना का सेनानी!!

जब बालक ये थे, पढ़ते थे,
तब आजाद नहीं ये लिखते थे!
यदि नाम पूछता था कोई,
चंद्रशेखर कहा करते थे!!

ये गांधीजी के अनुयायी,
सम्मिलित हुए सत्याग्रह में!
सविनय अवज्ञा आंदोलन में,
ये पकड़े गए बनारस में!!
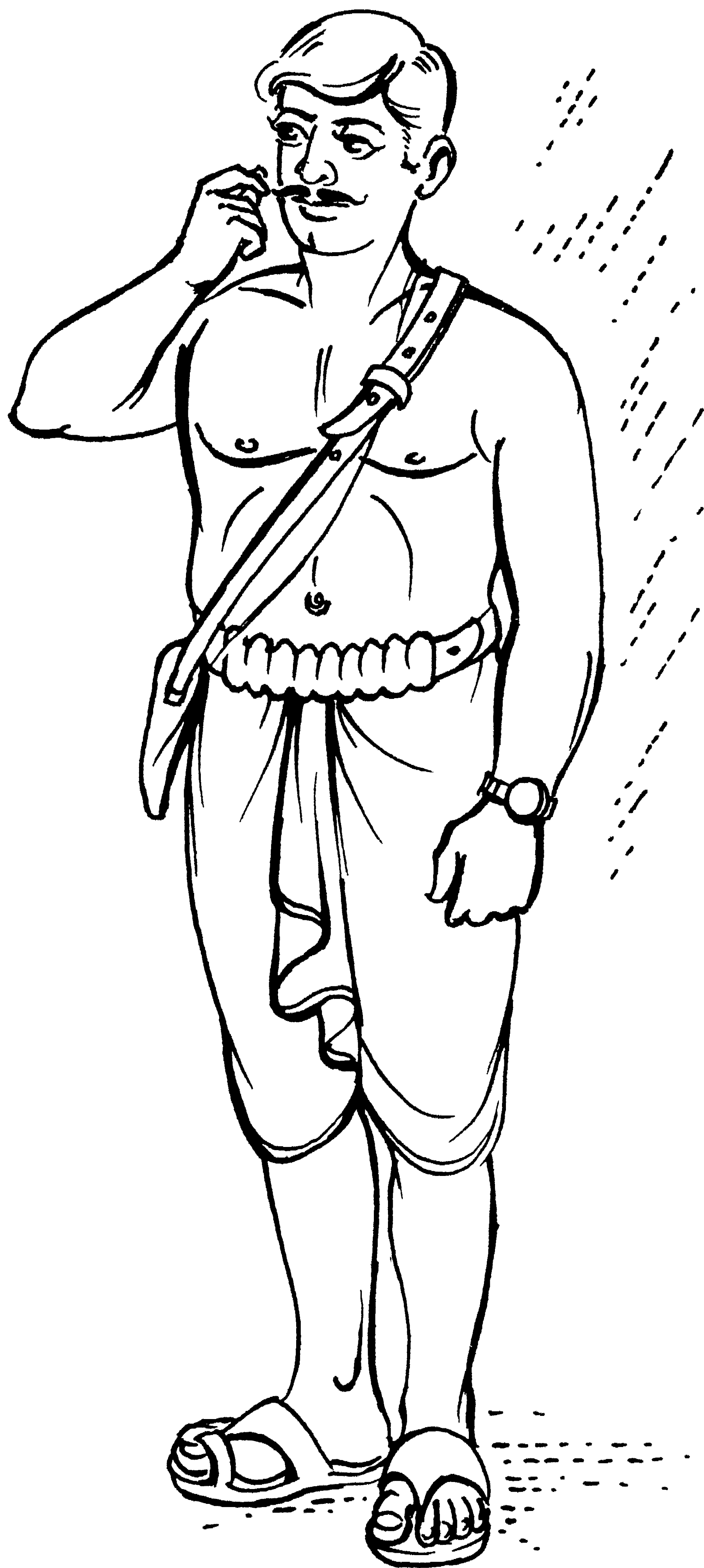
नाम पता पूछने पर बोले,
'है 'आजाद' हमारा नाम!
स्वाधीन है नाम पिता का,
जेल है मेरा निवास स्थान'!!

जज के प्रश्नों के उत्तर में,
एक शब्द कहते 'आजाद'!
झुँझलाकर बरस पड़ा आखिर,
'बंद करो अपनी आवाज'!!

बोला फिर 'लगता है मुझको,
लड़का पागल है या सनकी!
पंद्रह बेंत लगाओ इसको,
कर दो अक्ल दुरुस्त इसकी'!!

नंगी पीठ पर जब इनके,
जल्लाद के बेंत पड़ते थे!
हर प्रहार के साथ-साथ,
'भारत माता की जय' कहते थे!!

जो प्रबल अहिंसावादी थे,
अब हिंसावादी प्रबल बने!
मिले क्रांतिकारी दल में,
इनके भी नायक वहाँ बने!!

निर्भीक साहसी जोशीले,
भय तनिक न पास फटक पाया!
नाम से ही अंग्रेज काँपते,
बहुत बड़ा था डर छाया!!

हरचंद प्रयत्न किए फिर भी,
पुलिस न इनको पकड़ पाई!
घोषित किए इनाम भी बहुत,
पर छाया तक़ ना छू पाई!!

ये निश्शंक होकर एकाकी,
वेश बदलकर घूमा करते!
साथी करते थे जब शंका,
तो उनसे यही कहा करते!!

'आजाद नाम का साथी यह,
सदा-सदा आजाद रहेगा!
आजाद रहा जो जीवन में,
अंत समय आजाद मरेगा'!!

एक दिन प्रातः कानपुर से,
प्रयाग आए वेश बदलकर!
अलफ्रेड पार्क में जा पहुँचे,
साथी से मिलने की खातिर!!

इंतजार था जिस साथी का,
वह तो वहाँ नहीं था आया!
पुलिस अधीक्षक नाट बाबर,
संग पुलिस का दस्ता लाया!!

यद्यपि थे ये छद्म वेश में,
किंतु किसीने बता दिया था!

राई-राई रत्ती-रत्ती,
सब बाबर को जता दिया था!!

आते-ही-आते बाबर ने,
तड़तड़ फायर झोंक दिया!
गोली जाकर लगी जाँघ में,
हाथ से खून था रोक लिया!!

अंजली में भरकर खून को,
पहिले माँ को अर्घ चढ़ाया!
फिर मस्तक पर तिलक लगा के,
वृक्ष ओट मोरचा जमाया!!

घायल सिंह अकेला पाकर,
खून के प्यासे घिरे अनेक!
तीन तरफ बंदूक-राइफलें,
इनके पास थी पिस्टल एक!!

पिस्टल की अंतिम गोली से,
भारत माँ पर बलिदान हुए!
आजाद की आन नहीं टूटी,
आजाद मरे आजाद जिए!!

इनकी बहादुरी को लखकर,
दुश्मन भी सहज मुरीद हुए!
मातम छाया फिर घर-घर में,
जिस क्षण आजाद शहीद हुए!!

□

४१

आइए अब जरा दूर चलें,
क्या कहा, थक गए? समय नहीं!
अच्छा चढ़िए इस टीले पर,
देखिए नजारा बैठ यहीं!!

अब नजर डालिए दूर-दूर,
सब फूल एक से ही लगते!
ये बने शुद्ध सोने के हैं,
सबसे ज्यादा तभी चमकते!!

इन फूलों में बसी हुई है,
मन मोहक सुगंध मस्तानी!
सोने में खूब सुगंध मिली,
कवि मुख से यह निकली बानी!!

देशप्रेम के ये दीवाने,
सबकुछ जिनने किया निछावर!
माता का वेश सँवारा था,
अपना तन-मन-धन सब देकर!!

गाथा नहीं किसीने गाई,
इतिहास भी खामोश रहा है!
गुमनाम रहे ये जीवन भर,
बलिदान भी गुमनाम रहा है!!

इन संतानों को इस कारण,
इतना सुंदर उपहार मिला!
गुमनाम शहीदों को इससे,
माँ का है ज्यादा प्यार मिला!!

□

क्षमा कीजिए

क्षमा कीजिए, एक प्रश्न है,
अब तक जितना देखा हमने!
हमने फूल-ही-फूल देखे,
देखा न कहीं काँटा हमने!!

संतानें आती हैं थककर,
माँ की गोदी में करने विश्राम!
माँ की ममतामयी गोद में,
काँटों का फिर क्या है काम!!

संतानों के पग से काँटे,
माँ तो सदैव चुना करती!
यह तो संतानें ही हैं जो,
काँटा बनकर माँ के चुभतीं!!

□

छपते-छपते

इस भ्रम में हरगिज ना रहना,
देख चुके सारी फुलवारी!
दसियों साल में भी नहीं तुम,
देख सकोगे बगिया सारी!!

है असीम और परिधि हीन,
भारत माता की फुलवारी!
नए असंख्य फूल खिलने को,
इसमें गुंजाइश है भारी!!

इस गुच्छे सुनहरे को देखो,
ये ताजे फूल हैं अभी खिले!
कारगिल के इन शहीदों को,
माँ के हृदय निकट स्थान मिले!!

वेश बदल पाकिस्तानी सैनिक,
घुसे कारगिल में धोखे से!
मिला दिए धूल में इनने,
उनके नापाकी मंसूबे!!

भारत के वीर जवानों ने,
कर दिए दाँत उनके खट्टे!
अपने रण-कौशल से इनने,
छुड़ा दिए दुश्मन के छक्के!!

ये लड़े वीरता से उनसे,
रणभूमि में वीर गति पाई!
पर कभी भूलकर भी इनने,
नहीं दुश्मन को पीठ दिखाई!!

ये बाधाओं से नहीं रुके,
बैरी का मुख ये मोड़ गए!
ये अभिमन्यु के ही समान,
दुश्मन के बंकर तोड़ गए!!

राणा साँगा और गोरा बादल,
की शूर वीर शृंखला में!
अपने ही बल-विक्रम से,
ये कड़ियों पर कड़ियाँ जोड़ गए!!

□

उपसंहार

स्वर्ग नहीं कर सकता कदापि,
जननी जन्मभूमि की समता!
जननी जन्मभूमि ही कर सकती,
जननी जन्मभूमि की समता!!

भारत माँ की गौरव गरिमा,
वीणापाणि ने लिखनी चाही!
कागज कलम और स्याही की,
समस्या उनके सम्मुख आई!!

कज्जल गिरि को घोल उदधि में,
स्याही बनी चटक अति सुंदर!
कल्प-द्रुम की शाख कलम बनी,
कागज बन गए अवनी-अंबर!!

भर डाले दोनों ही कागज,
सरस्वती थककर चूर हुई!
भारत माँ की गौरव गरिमा,
पूरी न हुई अपूर्ण रही!!

भारत माँ की तुम संतानो,
दिल से ही भारतीय बनना!
माँ का गौरव बढ़ता जाए,
ऐसे ही कार्य सदा करना!!

भारत की फिर प्रगति देखकर,
करे प्रशंसा दुनिया सारी!
नाज करे तुम सब पर ही,
भारत माता की फुलवारी!!

बृज विभूति डॉ. तेज बहादुर 'तेज'

अपनी प्रेरणास्रोत धर्मपत्नी श्रीमती बृज रानी के साथ